2

यारोबाम (2)

एक धार्मिक पापी

वचन पाठः 1 राजा 11:26-39; 12:1-14:20

इतिहास गवाह है कि अच्छाई के लिए हो या बुराई के लिए, परिवारों के लिए हो या नगरों या कौमों के लिए, मानवीय मामलों में आम तौर पर दिशा एक व्यक्ति ही तय करता है।[1] आप कहते हैं, ''यह तो गलत बात है। एक आदमी को इतना अधिक प्रभाव नहीं दिया जाना चाहिए। हर मानवीय जीव को बिना दूसरे लोगों के हस्तक्षेप में अपना भविष्य तय करने की अनुमति होनी चाहिए।'' आप सही कह रहे हैं; परमेश्वर ने हमें ऐसा ही बनाया था। तौ भी लोग और राष्ट्र परमेश्वर के वचन की मन को जांच लेने वाली खोज के बिना और अपने निर्णय लिए बिना सत्ता में शामिल लोगों के चलन, जीवनशैली और निर्णयों को बिना विरोध के और बिना सोचे समझे मान लेते हैं। परिणाम यह होता है कि वे आमतौर पर अपने अगुवों के इशारों पर नाचने वाली कठपुतलियां बन जाते हैं। कम विरोध का मार्ग बेकाबू नदियां और आज्ञा न मानने वाले लोग बना देता है। परमेश्वर द्वारा हमें दी गई चुनने की स्वतन्त्र इच्छा का सही इस्तेमाल न करके हम स्वेच्छा से अपने आपको किसी दूसरे के कार्यक्रम की दासता में दे देते हैं।

इस्राएलियों ने अपने राजा के रूप में यारोबाम का चयन करके अपने आप को बधाई दी होगी। आखिर उसमें वे सब गुण थे, जो अच्छे राजा में होने आवश्यक हैं। यानी उसमें क्षमता, करिश्मा, आत्मविश्वास और नेतृत्व की स्वाभाविक विशेषताएं थी। नये राजा के लिए इससे बेहतर पसन्द और नहीं हो सकती थी! जवान यारोबाम के साथ उनका भविष्य उज्ज्वल और उन्नत दिखाई दे रहा था। ऐसा उन्हें लगा।

उन्हें इस बात का कतई अनुमान नहीं था कि उनकी घमण्डी पसन्द उन्हें उस मार्ग में धकेल देगी, जहां से राज्य कभी फिर पहले वाली स्थिति में नहीं आ पाएगा। यारोबाम ने बाइस वर्ष तक राज किया (931 से 910 ई.पू.),[2] परन्तु वे वर्ष इस्राएल के लिए विनाशकारी थे।

यारोबाम से लोगों की चमकदार सफलता की अपेक्षा वह पूरी तरह से असफल रहा। एक बात जिसके लिए उसे याद किया जाता है वह यह है कि वह इस्राएलियों को पाप में ले गया। इस अर्थ में वह शैतान का नायक था। वह एक विरोधाभास था। वह एक धार्मिक पापी था। आम तौर पर यदि कोई धार्मिक हो तो माना जाता है कि वह पापी नहीं होगा और यदि कोई पापी हो तो माना जाता है कि वह धार्मिक नहीं है। परन्तु यारोबाम धार्मिक भी था और पापी भी। यही कारण है कि परमेश्वर की दृष्टि में उसका जीवन इतना घृणित था। यारोबाम के बारे में पच्चीस बार कहा गया कि उसने पाप किया और इस्राएल के पाप करने का कारण बना। अपने जीवन में ऐसी यादगार छोड़ना किसी के लिए भी कितना खतरनाक है!

और अधिक स्पष्ट कहना हो तो उसका पाप क्या था? यारोबाम ने ऐसा क्या किया था? वह

बिल्कुल असफल क्यों था?

पाप की परिभाषा

उस प्रश्न का उत्तर देने से पहले, शायद हमारे लिए पाप को दो व्यापक श्रेणियों अर्थात नैतिक पाप और धार्मिक पाप में बांटना सहायक होगा। बाइबल कहीं भी ऐसा अन्तर नहीं करती है। यहां हम ऐसा करने के लिए केवल इसलिए लालायित हो रहे हैं, ताकि उस पाप को स्पष्ट कर सकें, जिसका यारोबाम दोषी था।

नैतिक पाप वे पाप होते हैं जो इसलिए गलत हैं कि उनसे दूसरों को या हमें कष्ट होता है। उन्हें करने की मनाही के कारण वे हानिकारक नहीं हैं बल्कि *उन्हें करने की मनाही उनके हानिकारक होने का कारण है*। हमारे प्रेमी पिता के रूप में परमेश्वर ने ऐसे व्यवहारों और कार्यों को रोककर जिससे मन और विवेक, अर्थात देह और व्यक्ति घायल हों और उन्हें हानि हो, हमारी भलाई का ध्यान रखा है। निष्कपटता से इस्तेमाल किए जाने पर हमारा सीमित कारण यह निष्कर्ष निकालता है कि मानवीय जीव को हानि पहुंचाने वाली या उसे भ्रष्ट करने वाली किसी भी चीज़ को पाप माना जाए।

धार्मिक पाप वे पाप हैं जो इसलिए गलत हैं क्योंकि वे परमेश्वर की स्पष्ट आज्ञाओं को तोड़ना है। *वे हानिकारक हैं क्योंकि उनकी मनाही की गई है;* उनकी मनाही उनके हानिकारक होने के कारण की गई है। परमेश्वर सर्वशक्तिमान है, और वह हमें बताता है कि उसकी आराधना, सेवा और प्रतिनिधित्व कैसे करना है। आवश्यक नहीं कि हर बात में अपने निर्देशों का आधार बताने के लिए वह अपना तर्क दे, बल्कि वह चाहता है कि हम उसकी आज्ञा मानें। उदाहरण के लिए लैव्यव्यवस्था 10 अध्याय में उसने नादाब और अबीहू को बताया कि तम्बू में उनकी आराधना में किस प्रकार की आग का इस्तेमाल करना है। वे उसकी व्यवस्था को जानते थे, परन्तु उन्होंने इसे गम्भीरता से नहीं लिया, इसकी उपेक्षा की और इसे नकार दिया। उसके निर्देशों को उनके द्वारा न मान पाने के कारण विनाशकारी परिणाम मिले।

> तब नादाब और अबीहू नामक हारून के दो पुत्रों ने अपना अपना धूपदान लिया, और उन में आग भरी, और उसमें धूप डालकर उस ऊपरी आग को जिसकी आज्ञा यहोवा ने नहीं दी थी यहोवा के सम्मुख अर्पित किया। तब यहोवा के सम्मुख से आग निकली और कर उन दोनों को भस्म कर दिया, और वे यहोवा के साम्हने मर गए (लैव्यव्यवस्था 10:1, 2)।

नादाब और अबीहू पर हत्या, चोरी या चुगली का दोष नहीं था, जिन्हें आम तौर पर नैतिक पाप माना जाता है। उन्होंने केवल परमेश्वर के निर्देशों को अनदेखा किया था। उन्होंने उसके दिशा-निर्देशों को ताक पर रख दिया। उन्होंने उसकी शर्तों को नकार दिया। उन्होंने एक धार्मिक पाप किया था, न कि नैतिक पाप। कोई तर्क दे सकता है, ''जिस आग की आज्ञा परमेश्वर ने दी है यदि उससे अलग आग का इस्तेमाल कर लिया जाए तो उसमें बुराई ही क्या है? आखिर, इससे किसी का क्या जाता है। यह तो अनजाने में एक नयापन था, थोड़ा बदलाव था, एक नया ढंग था।'' उनके कार्य न्याय की बातों से कहीं गहरे चले गए। उन्होंने परमेश्वर की इच्छा को ठुकराने का पाप किया था। वे आज्ञा न मानने वाले लोग थे। उन्होंने अपने आप को परमेश्वर की जगह रख

लिया था। अपने कामों के द्वारा उन्होंने कहा, ''परमेश्वर की आराधना करने के ढंग का निर्णय हम लेंगे।''

इसका अर्थ यह हुआ कि धार्मिक पाप और नैतिक पाप में अन्तर स्पष्ट है। दूसरों को या अपने आप को हानि न पहुंचाने का तर्क नैतिक पाप को रोकने के पीछे है, जबकि धार्मिक पाप से बचने के पीछे का तर्क यह है कि परमेश्वर को सम्मान दिया जाए और उसकी आज्ञा का पालन किया जाए।

यारोबाम की गम्भीर गलती धार्मिक थी, न कि नैतिक। उसने मनश्शे की तरह निर्दोष लोगों की हत्या नहीं की थी (2 राजाओं 21:16); उसने दाऊद जैसी अनैतिकता नहीं बरती थी (2 शमुएल 11:1-5); और शाऊल की तरह प्रतिज्ञाएं नहीं तोड़ी थीं (1 शमुएल 15:17-22)। तौ भी उसने मूसा की व्यवस्था को ठुकराया था; उसने अपने ही धार्मिक नियम लिखे और उन्हें मानने के लिए लोगों की अगुआई की।

पाप का विवरण

गद्दी पर बैठने के थोड़ी देर बाद ही यारोबाम दी गई चेतावनी पर इतराया और धार्मिक अवज्ञा में सिर से पैर तक डूब गया। पहले तो उसने बेतेल और दान में पूजा के नये केन्द्र स्थापित किए। बेतेल इस्राएल के दक्षिणी भाग में यरूशलेम से आठ मील के घेरे में था और दान फिलस्तीन की उत्तरी सीमा में।

> ... राजा ने ... लोगों से कहा, यरूशलेम को जाना तुम्हारी शक्ति से बाहर है ...। तो उस ने एक बछड़े को बेतेल, और दूसरे को दान में स्थापित किया (12:28, 29)।

राज्य के विभाजन के समय दक्षिणी राज्य ने यरूशलेम को अपने पास रखा जो वचन के अनुसार आराधना का स्थल था। परमेश्वर के लोगों को उसकी आराधना के लिए वर्ष में तीन बार यरूशलेम जाना आवश्यक था (निर्गमन 23:17)। इस कारण यारोबाम को अपने आप से पूछना पड़ा था, ''आराधना के लिए यरूशलेम जाने वाले लोगों को क्या उत्तर दूंगा? यदि वे आराधना के लिए यरूशलेम जाते हैं तो वहां ठहरना भी चाहेंगे। मेरा राज्य तो मेरे हाथ से निकल जाएगा।'' वह इस प्रश्न का हल कैसे करे? क्या वह लोगों से परमेश्वर की आज्ञा मानते हुए यरूशलेम जाने का आग्रह करे, या परमेश्वर के नियम को नकार कर आराधना का कोई नया प्रबन्ध बनाए जिससे लोगों को यरूशलेम जाने की आवश्यकता न हो? यह एक बड़ा निर्णय था। पूरी कौम को उसकी अगुआई की प्रतीक्षा थी। इसके लिए सच्ची निष्ठा, विश्वास और सही निर्णय लेने का साहस आवश्यक था। यारोबाम ने इस आड़ में कि परमेश्वर की आराधना के लिए यरूशलेम जाना बहुत कष्टदायक है, क्योंकि वह बहुत दूर है, पूरी तरह से परमेश्वर की आज्ञा को तोड़ दिया।

यारोबाम इससे भी आगे निकल गया, क्योंकि उसने आराधना की नई चीज़ें अर्थात सोने के बछड़े वहां रख दिए।

> तो राजा ने सम्मति लेकर सोने के दो बछड़े बनाए और लोगों से कहा, ... ''हे इस्राएल

अपने देवताओं को देखो, जो तुम्हें मिस्र देश से निकाल लाए हैं'' (12:28)।

परमेश्वर के विश्वासी आराधक केऐसा काम करने की बात सोची भी नहीं जा सकती। यारोबाम और इस्राएलियों को सीनै पर्वत के नीचे हारून की अगुआई में लोगों द्वारा सोने का बछड़ा बनाकर उसकी पूजा करने की घटना के कारण ऐसी गलती का पता होना चाहिए था (निर्गमन 32:1-6)। दस आज्ञाएं लेकर मूसा के सीनै पर्वत से नीचे आने से पहले ही, इस्राएलियों ने उनमें से कई आज्ञाएं तोड़ डाली थीं। यह हो सकता है कि यारोबाम यहोवा की आराधना के विकल्प के रूप में नहीं बल्कि यहोवा की आराधना के प्रतीकों के रूप में इन बछड़ों को लगाना चाहता है। यदि ऐसा था भी तो ऐसे बछड़े बनाना पूरी तरह से अनाधिकृत और दस आज्ञाओं में से दूसरी आज्ञा का उल्लंघन था।

यारोबाम ने इस नई बात को यहीं खत्म नहीं किया। उसे वेदी की समस्या भी आई। नूह अब्राहम और मूसा के समय से ही इस्राएलियों में परमेश्वर को बलिदान भेंट करने की प्रवृत्ति थी। इस्राएली लोग परमेश्वर को बलिदान भेंट करने पर ज़ोर देते थे। आराधना की नई वेदियां बना कर यारोबाम यदि बलिदानों के लिए नई वेदियां न बनाता तो इससे इस्राएल में उसके लोगों ने संतुष्ट नहीं होना था; उन्होंने फिर भी अपने बलिदान भेंट करने के लिए यरूशलेम जाने की इच्छा करनी थी।

इस समस्या के साथ एक और जटिलता यह थी कि परमेश्वर ने पूरे इस्राएल के लिए बलिदान की जगह यरूशलेम ही ठहराई थी। नई वेदियां बनाना प्रत्यक्ष रूप से परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन था। यारोबाम दुविधा में था कि वह नई वेदियां बनाकर परमेश्वर की आज्ञा को तोड़े या फिर नई वेदियां बनाने से इनकार करके यहूदा के लोगों को खोने का जोखिम ले जो बलिदान के लिए यरूशलेम में जाते हैं ? उसने क्या किया ? उसने नई वेदियां बनाना चुना। आराधना की उसकी वेदियों को बाद में पूरी हुई भविष्यवाणी के रूप में देखा गया यानी नई होने के बावजूद उनमें यरूशलेम वाली सब बातें थीं। ''और ... वह बेतेल में अपनी बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया। ... उस ने इस्राएलियों के लिए एक पर्व ठहरा दिया, और धूप जलाने को वेदी के पास चढ़ गया'' (12:33)। अपने नये धर्म में वह इतना आगे निकल चुका था कि उसके लिए वापस आना कठिन था; उसने नई वेदियां बना लीं, उनके लिए परमेश्वर की इच्छा चाहे जो भी थी। एक पाप ने दूसरे का रास्ता साफ़ कर दिया था।

चौथा, यारोबाम ने याजकों का नया प्रबन्ध बना लिया। ''और उस ने ऊंचे स्थानों के भवन बनाए, और सब प्रकार के लोगों में से जो लेवीवंशी न थे, याजक ठहराए'' (12:31)। परमेश्वर ने ठहराया था कि अम्राम के घराने में से केवल लेवी ही आधिकारिक याजकों का काम कर सकते हैं (2 इतिहास 13:10)। यारोबाम को आराधना के नये केन्द्रों में सेवा करने के लिए असली याजक ढूंढ़ने में दिक्कत आनी थी। वे यह काम क्यों करते ? यदि वे परमेश्वर के वचन का सम्मान करते थे तो उन्होंने ऐसी लज्जाजनक गलती का साथ देने के विचार के भय से ही पीछे मुड़ जाना था (2 इतिहास 13:9)। इसलिए यारोबाम ने उन ग्यारह गोत्रों में से ऐसे लोगों को लेते हुए जिन्होंने राजा की बात ही माननी थी चाहे यह कितना भी बड़ा पाप क्यों न हो, याजकों का अपना ही वर्ग बना लिया।

पांचवां, उसने नया वार्षिक पर्व बना लिया और धार्मिक कैलेंडर बदल दिया।

> और जिस महीने की उस ने अपने मन में कल्पना की थी अर्थात् आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन को वह बेतेल में अपनी बनाई हुई वेदी के पास चढ़ गया। उस ने इस्राएलियों के लिए एक पर्व ठहरा दिया, और धूप जलाने को वेदी के पास चढ़ गया (12:33)।

मूसा की व्यवस्था में धार्मिक वर्ष के महत्वपूर्ण भाग में सातवां महीना अलग किया गया है: पहला दिन नरसिंगों का (लैव्यव्यवस्था 23:23-25), दसवां दिन प्रायश्चित का (लैव्यव्यवस्था 23:27) और पन्द्रहवें दिन से बाइसवें दिन तक झोंपड़ियों का पर्व होता था (लैव्यव्यवस्था 23:33-36)। यारोबाम ने धार्मिक कैलेंडर को केवल एक महीना आगे करके आठवें महीने की पन्द्रह तारीख कर दिया। बाइबल कहती है कि यही वह महीना था ''जिस महीने की उस ने अपने मन में कल्पना की थी'' (12:33)।

इस सारे बदलाव और नये प्रबन्ध के कारण परमेश्वर का नहीं यारोबाम का धर्म बना। यारोबाम परमेश्वर की इच्छा को नहीं बल्कि अपने ही मन की इच्छा पूरी करनी चाह रहा था। कौम के अगुवे के रूप में वह पूरी तरह से विफल हो गया था। उसे लोगों को परमेश्वर की इच्छा में अगुआई देते हुए परमेश्वर का प्रतिनिधि होना चाहिए था, परन्तु वह एक अर्ध ईश्वर बन गया था जो लोगों को अपनी ही इच्छा मनवाने के लिए अपने पीछे लगा रहा था।

शैतान वास्तव में लोगों को धर्म से हटाने की कोशिश नहीं करता; वह परमेश्वर के धर्म की जगह मनुष्य के धर्मों के विकल्प को मानने के लिए तैयार करता है। यारोबाम प्रशंसनीय, सही लगने वाला और स्पष्टतया व्यावहारिक था। केवल एक बात गलत थी जो वह कर रहा था कि वह अपनी इच्छा को मनवाने के लिए परमेश्वर की इच्छा को टाल रहा था!

पाप की निन्दा की गई

अपना धर्म बना लेने और लोगों को अपने पीछे लगाने के यारोबाम के पाप की स्पष्ट रूप से परमेश्वर ने निन्दा की। वास्तव में परमेश्वर ने घोषणा की कि उसका वचन तीन नाटकीय क्रमों में माना जाना चाहिए, जो इस प्रकार है।

सार्वजनिक ताड़ना के द्वारा

यारोबाम अपने बनाए हुए पर्व के दिन को मनाने के लिए आठवें महीने के पन्द्रहवें दिन बेतेल में गया। कठोर अवज्ञा और ढिठाई से अकड़े हुए वह इसके ऊपर धूप जलाने के लिए नई वेदी पर गया (12:33)। उसे आश्चर्य हुआ कि परमेश्वर का एक जन अपने होंठों पर न्याय की बात लिए हुए फटे कपड़ों वाला यहूदा से आया नबी भीड़ में से निकला। वहां इकट्ठे हुए लोगों पर लाई गई गम्भीरता से और प्रबन्धकों पर मौत की सी खामोशी छाने पर उस नबी ने वेदी पर आरोप का संकेत करते हुए परमेश्वर के दण्ड की घोषणा की:

> वेदी, हे वेदी! यहोवा यों कहता है, कि सुन, दाऊद के कुल में योशिय्याह नाम एक लड़का

उत्पन्न होगा, वह उन ऊंचे स्थानों के याजकों को जो तुझ पर धूप जलाते हैं, तुझ पर बलि कर देगा; और तुझ पर मनुष्यों की हड्डियां जलाई जाएंगी (13:2)।

यारोबाम की वेदी वह जगह होनी थी, जहां इस पर बलिदान भेंट करने वाले नकली याजकों की हड्डियां एक दिन जलाई जानी थीं। इस भविष्यवाणी में योशिय्याह का नाम लिया गया था। इस कारण हम इसे ''नाम से भविष्यवाणी'' अर्थात वह भविष्यवाणी कहते हैं, जिसमें किसी विशेष व्यक्ति के विशेष नाम की भविष्यवाणी की गई है, जिसके शासन में वेदी खण्डित होगी। यह भविष्यवाणी भले राजा योशिय्याह के शासन में तीन सौ साल बाद पूरी हुई (2 राजाओं 23:20)। नबी ने यह कहते हुए एक चिह्न दिया कि ''यह वचन जो यहोवा ने कहा है, इसका चिह्न यह है कि यह वेदी फट जाएगी, और इस पर की राख गिर जाएगी'' (13:3)। इस भविष्यवाणी की अपनी प्रामाणिकता थी। इसका प्रमाण तुरन्त दिया जाना था।

यारोबाम ने अपना हाथ बढ़ाते हुए अपने पास के लोगों से कहा, ''उसको पकड़ लो!'' इस गवाही के लिए कि वह नबी परमेश्वर का भेजा हुआ था और उसने सच कहा था और यारोबाम को परमेश्वर की ओर से दण्ड मिल रहा था, उसका बढ़ा हुआ हाथ ''सूख गया'' (13:4)। तुरन्त वह वेदी फट गई और उसके ऊपर की राख गिर गई। परमेश्वर के न्याय की नष्ट कर देने वाली सामर्थ से परेशान यारोबाम अपने अधरंग को ठीक करने की विनती करने लगा। परमेश्वर के अद्‌भुत अनुग्रह के प्रदर्शन के रूप में नबी ने परमेश्वर से उसका हाथ और भुजा ठीक करने के लिए प्रार्थना की। उसकी प्रार्थना मान ली गई (13:6)। परमेश्वर हमेशा दूसरा अवसर देने वाला परमेश्वर रहा है। यारोबाम को परिस्थितियों के द्वारा मन फिराने का निमन्त्रण दिया जा रहा था। ''मन परिवर्तन के लगभग'' एक पल में यारोबाम ने नबी से अपने महल में भोजन करने और कुछ खाने के लिए आने को कहा। नबी ने जवाब दिया कि उसे नगर में किसी के साथ खाने की अनुमति नहीं है और उसे घर वापसी के लिए उससे अलग रास्ते से जाने की आज्ञा दी गई थी, जिससे वह आया था। यहां एक बहुत कम मिलने वाला मोती अर्थात वह नबी मिलता है, जिसने राजा के साथ भोजन करने से मना कर दिया! कोई संदेह नहीं कि यारोबाम को लगा कि यह उसकी आज्ञा को तोड़ना है, परन्तु धर्मी निश्चय के प्रति उसका झुकाव थोड़ी देर के लिए होना था। नबी की डांट केवल यारोबाम के धार्मिक पाप के लिए परमेश्वर की पहली डांट थी।

नबी की मृत्यु के द्वारा

उस दिन बाद में एक और तरह की डांट मिली। यहूदा के नबी के साथ एक बूढ़े नबी द्वारा छल किया गया। उसने उसे दिए गए ईश्वरीय निर्देश का उल्लंघन किया। बूढ़े नबी के साथ खा लिया और एक शेर द्वारा मार डाला गया (13:23-26)। (यह ऐसी बात है जिसका और विस्तार से अध्ययन हम अगले पाठ में करेंगे।) एक छोटी लगने वाली गलती उसकी मृत्यु का कारण बन गई। वह अपने गधे और शेर के पास, जिसने उसे मारा था, सड़क के किनारे मरा हुआ पाया गया। इस कार्य के द्वारा एक सच्चाई की घोषणा की जा रही थी कि परमेश्वर की बात मानना आवश्यक है। चाहे कोई नबी ही क्यों न हो, उसे परमेश्वर की इच्छा न मानने का दण्ड अवश्य मिलेगा। परमेश्वर यह सुनिश्चित करता है कि वह चाहता है कि उसके निर्देशों का पालन किया जाए।

यारोबाम के साथ-साथ दूसरे सब लोगों के लिए इस नबी की मृत्यु ''आज्ञा न मानने का सबक'' थी। ऐसा कोई संकेत नहीं है कि यारोबाम पर उस मारे गए नबी का क्या असर होगा।

कष्टदायक दुःख के द्वारा

तीसरा दण्ड आया। यारोबाम का एक बेटा था (14:1-20)। धर्मी पुरुष एली के पुत्र दुष्ट थे (1 शमुएल 2:11-17), परन्तु दुष्ट पिता यारोबाम का एक भक्त बेटा था। उसका नाम अबिय्याह था। एक दिन यह लड़का बहुत बीमार पड़ गया। यारोबाम और उसकी पत्नी को मालूम नहीं था कि वह जीवित रहेगा या मर जाएगा। वे दुःख में परेशान थे। निराशा में यारोबाम ने अपनी पत्नी से भेष बदलकर अहिय्याह अर्थात उस नबी के पास जाकर अपने बीमार बेटे का भविष्य पता करने के लिए कहा, जिससे यारोबाम घृणा करता था। भेष बदला और दस रोटियां, और टिकियां और एक कुप्पी मधु लेकर नबी के पास चली गई। अहिय्याह शीलो में रहता था और कई सालों से वहां रह रहा था, वह अन्धा था। जैसे ही यारोबाम की पत्नी उसके पास पहुंची, अहिय्याह को प्रकाशन के द्वारा बता दिया गया था कि उसके पास कौन आ रहा है और उसे उसको क्या बताना है। उसने कहा, ''हे यारोबाम की स्त्री! भीतर आ; तू अपने को क्यों दूसरी स्त्री बनाती है? मुझे तेरे लिए भारी सन्देश मिला है'' (14:6)। कांपते हुए, वह डरती-डरती अन्दर आई और उसे बता दिया गया कि जैसे ही वह अपने घर पहुंचेगी लड़का मर जाएगा। लड़के की मृत्यु न्याय की अभिव्यक्ति नहीं थी। न्याय की अभिव्यक्ति बाद में दी गई थी। उसकी मृत्यु अनुग्रह के एक कार्य के रूप में होनी थी:

> ''... यारोबाम की सन्तानों में से केवल उसी को कब्र मिलेगी, क्योंकि यारोबाम के घराने में से उसी में कुछ पाया जाता है, जो यहोवा इस्राएल के प्रभु की दृष्टि में भला है'' (14:13)।

जॉन सी. विटकॉम्ब ने लिखा है:

> इस लड़के को सम्मान देने का परमेश्वर का ढंग उसे बीमारी से मरने देना और कब्र में गाड़ने देना था! ... शाही परिवार पर कितना भयंकर न्याय होने वाला था (1 राजाओं 14:10, 11) कि बिस्तर पर मर कर इससे बचना बहुत बड़ी आशीष होना था।[3]

यारोबाम की पत्नी को भी बताया गया था कि परमेश्वर एक राजा को खड़ा करेगा जो यारोबाम के घराने को काट डालेगा और उसके घराने के सब पुरुष भयंकर मृत्यु से मर जाएंगे। यह यारोबाम पर परमेश्वर के न्याय की अभिव्यक्ति थी। अहिय्याह ने अश्शूरी दासता की पहली भविष्यवाणी का उल्लेख करके न्याय की घोषणा समाप्त की (14:15, 16)। यारोबाम ने अपने लोगों को पाप के ऐसे मार्ग पर चला दिया था जिससे उन्होंने कभी मन नहीं फिराना था, सो परमेश्वर ने पहले राजा के राज्यकाल में घोषणा की कि यह जाति अपने पाप के कारण नष्ट हो जाएगी।

> क्योंकि यहोवा इस्राएल को ऐसा मारेगा, जैसा जल की धारा से नरकट हिलाया जाता है,

> और वह उनको इस अच्छी भूमि में से जो उसने उनके पुरखाओं को दी थी, उखाड़कर महानद के पार तितर-बितर करेगा; क्योंकि उन्होंने अशेरा नाम मूरतें अपने लिए बनाकर यहोवा को क्रोध दिलाया है और उन पापों के कारण जो यारोबाम ने किए और इस्राएल से कराए थे, यहोवा इस्राएल को त्याग देगा (14:15, 16)।

बुराई ने यारोबाम का साथ देने के कारण इस स्त्री को बच्चे की मृत्यु के समय का स्पष्ट निर्देश दिया गया था।

> तू उठ और अपने घर जा, और नगर के भीतर तेरे पांव पड़ते ही वह बालक मर जाएगा। उसे तो समस्त इस्राएली छाती पीटकर मिट्टी देंगे; यारोबाम की सन्तानों में से केवल उसी को कब्र मिलेगी, क्योंकि यारोबाम के घराने में से उसी में कुछ पाया जाता है, जो यहोवा इस्राएल के प्रभु की दृष्टि में भला है (14:12-14)।

आप कल्पना कर सकते हैं कि इस स्त्री के मन में क्या चल रहा था? उसे मालूम था कि जब वह घर पहुंचेगी तो उसका बेटा मर जाएगा। निश्चय ही उसने घर जाने और अपने बेटे की जान बचाने के लिए एक तरीका निकालने की कोशिश की, पर कोई तरीका न मिला। उसका मन परेशान होगा कि क्या किया जाए। अन्त में वह परमेश्वर के अपरिवर्तनीय न्याय का सामना करने के लिए घूमती हुई घर चली गई। उसके न्याय पक्के और दृढ़ हैं; उन्हें कोई भी दरकिनार नहीं कर सकता चाहे वह मां ही हो। उसके घर पहुंचते ही उसका बेटा मर गया। परमेश्वर अपनी बात इससे अधिक स्पष्टता से और कैसे कह सकता था। यारोबाम के पाप पर उसका न्याय तीन बार बताया जा चुका था। क्या यारोबाम को समझ आई और उसने मन फिराया? नहीं। वह पाप में लगा रहा।

हमारे लिए यारोबाम के पाप के सम्बन्ध में दण्ड का एक अन्तिम संदेश अर्थात यारोबाम की मृत्यु का संदेश दिया गया है। परमेश्वर हम से उम्मीद करता है कि हम उसकी चेतावनियों पर कान लगाएं। अन्त में उसकी सेवा करने या अपनी असफलताओं से मन फिराने का अवसर निकल जाएगा। पवित्र आत्मा हमें दृश्यों के पीछे ले जाकर दिखाता है कि यारोबाम के मरने पर क्या हुआ था: "... *यहोवा ने उसको ऐसा मारा* कि वह मर गया" (2 इतिहास 13:20ख)। वह केवल स्वाभाविक मृत्यु नहीं मरा। बाइस साल का उसका शासन तब खत्म हुआ जब परमेश्वर ने न्याय का अपना मार्ग उस पर रखा और उसे मृत्यु दी। उसके शासन का अन्त भी वैसे ही हुआ जैसे आरम्भ हुआ था, परमेश्वर की आज्ञा न मानने से। यारोबाम ने कभी मन नहीं फिराया। उसकी पत्नी का जीवन परमेश्वर की सच्चाई में नहीं बल्कि लोगों को झूठ को मानने, विश्वास करने और उसमें बने रहने में अगुआई दी।

सारांश

इन घटनाओं में क्या हमारे लिए कोई प्रासंगिकता है? बेशक। ये ईश्वरीय विवरण घोषणा करते हैं कि "परमेश्वर आज्ञा पालन चाहता है!" कौन है जो यारोबाम का अध्ययन करे और परमेश्वर और जीवन के लिए उसके स्वार्थी ढंग से प्रभावित न हो कि आज्ञा तोड़ना किसी काम नहीं आता। मत्ती 7:22, 23 में हमारे प्रभु के शब्दों में यारोबाम की बात याद आती है:

> उस दिन बहुत से मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला, और तेरे नाम से बहुत से आश्र्यकर्म नहीं किए? तब मैं उनसे खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ।

धर्म काफी नहीं है! यारोबाम एक धर्म को मानता था! पर यह गलत धर्म था। यदि धर्म को मानना ही परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए काफी होता तो यारोबाम को परमेश्वर की स्वीकृति मिल गई होती। परमेश्वर नहीं चाहता कि आप *किसी* धर्म को मानें बल्कि वह चाहता है कि *आप* उसकी धार्मिकता को मानें। यारोबाम ने यह सबक कभी नहीं सीखा। उसने एक धार्मिक पापी होकर राजा के रूप में जीवन बिताया।

आप कहते हैं, ''मुझे समझ नहीं आता कि यारोबाम ने मन क्यों नहीं फिराया। उसे उसके पाप के लिए सरेआम डांटा गया था। जिस नबी ने उसे चेतावनी दी वह परमेश्वर की आज्ञा न मानने के कारण मर गया था। यारोबाम का अच्छा बेटा मर गया। यारोबाम को बताया गया था कि उसके घर के सभी नर सदस्य उसके पाप के कारण भयंकर मृत्यु मरेंगे। उसे दक्षिणी राजा अबिय्याह के द्वारा उनके गृहयुद्ध से पहले उसके पाप के लिए डांटा गया था (2 इतिहास 13:4-12)। तौ भी उसने कभी मन नहीं फिराया। उसने कभी परमेश्वर की डांट को गम्भीरता से नहीं लिया यह तो हैरानी की बात है।''

रुक कर इस पर विचार करें। क्या यह उससे अधिक हैरान करने वाला है जो आज हम देखते हैं? परमेश्वर ने नये नियम में इसकी रूपरेखा दे दी है कि हमें उसके सामने कैसे रहना है और कैसे उसकी आराधना करनी है तौ भी असंख्य साम्प्रदायिक कलीसियाएं बन गई है जिनमें से कोई भी नये नियम में नहीं मिलती है। परमेश्वर ने हमें बताया कि हमें विश्वास (यूहन्ना 8:24), मन फिराव (लूका 13:3), यीशु के अंगीकार (रोमियों 10:10) और मसीह में बपतिस्मा लेकर उसके पास आना आवश्यक है (रोमियों 6:3) तौ भी आधुनिक यारोबामों ने परमेश्वर के पास आने की अपनी-अपनी योजनाएं बना ली हैं। क्या परमेश्वर ने हमें उसके वचन का अध्ययन करने (प्रेरितों 17:11), भजन गाने (इफिसियों 5:19), प्रार्थना करने (1 थिस्सलुनीकियों 5:17), प्रभु के प्रत्येक दिन प्रभु-भोज में भाग लेने (प्रेरितों 20:7; 1 कुरिन्थियों 11:20, 21) और अपनी आमदनी के अनुसार हर सप्ताह के पहले दिन चन्दा देकर (1 कुरिन्थियों 16:1, 2) आराधना करने के लिए नहीं कहा है? परन्तु मनुष्य ने अपनी पसन्द और नापसन्द से मेल खाने के लिए परमेश्वर के धर्म को बदलकर रख दिया है।

दीनतापूर्वक आज्ञापालन कहां गया है? हम आज्ञापालन की आवश्यकता को समझेंगे या इक्कीसवीं शताब्दी के यारोबाम बन जाएंगे।

सीखने के लिए सबक:

मनुष्य का धर्म चाहे कितना भी आकर्षक और मोहक क्यों न लगे परमेश्वर की ओर से ठुकराया हुआ और मनुष्यों द्वारा इसे ठुकराया जाना आवश्यक है।

टिप्पणियां

[1]जर्मन नाज़ी तानाशाह, अडोल्फ़ हिटलर (1889-1945) और सोवियत यूनियन के नेता जोसफ़ स्टैलिन (1879-1953) के उदाहरण बेहतरीन होंगे। [2]देखें 1 राजाओं 14:20. [3]जौन सी. विटकॉम्ब, *ए हिस्टरी आफ़ इज़रायल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: बेकर बुक हाउस, 1971), 362.